Date 05/02/19

अध्याय - 1

1) Advance Sociological theory

सांकेतिक अंतःक्रियावाद / प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद

Q. प्रतीक से क्या अभिप्राय है? प्रतीकात्मक स्वरूपों के समाजशास्त्र अथवा प्रतीकात्मकवाद के अर्थ और विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए? इसके भेद और महत्व की व्याख्या कीजिए?

→ प्रतीकात्मक एक अत्यधिक व्यापक अवधारणा है जिसके अंतर्गत मैं सभी संकेत आ जाते हैं जिनकी सहायता से हम सामाजिक जीवन के संबंध विभिन्न विचार भाव आदि को व्यक्त करते हैं कि उससे दूसरे लोगों तक कुछ विशेष प्रकार के भाव अथवा विचार संप्रेषित हो जाते हैं इसी को प्रतीकात्मकवाद कहते हैं।

प्रतीकात्मकवाद का अर्थ

प्रतीकात्मकवाद प्रतीकों को व्यवहार में लाने की एक विधि या नियम की ओर संकेत करता है। इस प्रकार प्रतीकात्मकवाद का प्रत्यक्ष संबंध प्रतीकों से है। प्रतीक शब्द का अभिप्राय उस माध्यम से है जिसके द्वारा विचारों का सम्प्रेषण किया जाता है। प्रतीक शब्द से ही स्पष्ट है कि बहुत से व्यक्ति जो कि कुछ स्पष्ट करना, कुछ व्यक्त करना चाहते हैं किन्तु उसको सरल साफ-साफ वे व्यक्त नहीं कर पाते हैं। बल्कि विभिन्न चीजों तथा भाव को व्यक्त करने के लिए कुछ ऐसे चिन्हों या प्रतीकों का व्यवहार करता है जिनके माध्यम से वह अपनी वास्तविक भाव की ओर देखने या सुनने वालों को संकेत करता है देखने या सुनने वाला इन चिन्हों, प्रतीकों या संकेतों से ही अर्थ की कल्पना कर लेता है उदाहरण स्वरूप जैसे हम हाथ के इशारे से किसी व्यक्ति को पास बुलाते हैं तो वह हाथ के इशारे का अर्थ समझकर ही आपके समीप आता है। प्रतीक, भावों, अर्थों और मूल्यों का वाहक होता है। प्रतीकों के प्रयोग के द्वारा विचारों का प्रदर्शन तथा सम्प्रेषण सरलता पूर्वक होता है।

बाद उस प्रतीक का प्रयोग प्रतीक चिन्ह के रूप में होने लगता है।

प्रतिकात्मक अंतःक्रियावाद की व्याख्या करने के उद्देश्य से समस्त प्राणियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है :—

1. मानव

II. अमानव

मानव और अमानव की आवश्यकताएं एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। अतः इनकी मानसिक क्रियाओं में भी भिन्नता पायी जाती है। प्रतीकों के सृजन की क्षमता मात्रात्मक नहीं बल्कि गुणात्मक होती है। मानसिक रूप से श्रेष्ठ होने के कारण मनुष्य में प्रतीक सृजन की क्षमता होती है। यह क्षमता अमानव में विद्यमान नहीं होती।

प्रतीकों के भेद (Kinds of symbol)

प्रतिकात्मक अंतःक्रियावादी विचारों ने प्रतीकों के निम्न दो प्रकार माने हैं :—

1. **परिचयात्मक प्रतीक** :— इसके अंतर्गत वे प्रतीक आते हैं जो किसी वस्तु की सूचना या परिचय देते हैं जैसे :— टेलीफोन कोड, राष्ट्रीय झण्डा, लाल-हरी झण्डीयाँ आदि।

2. **संक्षिप्त प्रतीक** :— संक्षिप्त प्रतीक का सबसे अच्छा उदाहरण टेलीग्राम भेजने की मोरस प्रणाली है। जिसमें टिक-टिक के विशेष प्रकार के प्रतीकों से शब्द भेजे जाते हैं। इसी तरह दैनिक व्यवहार में अनेक संक्षिप्त प्रतीकों व्यवहार का उल्लेख है। उदाहरण के लिए मुँह पर अंगुली रखकर चुप रहने का संकेत किया जाता है। हाथ की क्रियाओं से मानव अशांत क्रियाओं और संवेगों को

अभिव्यक्त किया जाता है।

प्रतीकात्मकवाद / सांकेतिक अंतःक्रियावाद की अवधारणा और अर्थ

सांकेतिक अंतःक्रियावाद की अवधारणा में जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है वे सब प्रतीक आ जाते हैं। जिनकी सहायता से सामाजिक जीवन में विभिन्न विचारों तथा भावों को अभिव्यक्त किया जाता है। सांकेतिक अंतःक्रियावाद का अर्थ एक निश्चित प्रतीक का दूसरे लोगों के प्रतीक व्यवहार निर्धारित करना है सांकेतिक अंतःक्रियावाद प्रतीकों को व्यवहार में लाने की विधि या नियम से। इसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष तरीकों से है। प्रतीक का अर्थ संकेत या चिन्ह है। सामान्य जीवन में मनुष्य विभिन्न वस्तुओं अथवा भावों को व्यक्त करने के लिए ऐसे चिन्हों अथवा प्रतीकों का प्रयोग करता है जिनके माध्यम से वह अपने वास्तविक भाव की ओर देखने या सुनने वालों को संकेत करता है। देखने या सुनने वाला इन चिन्हों, प्रतीकों या संकेतों से ही यथार्थ का अनुभव प्राप्त लेता है। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण नृत्य की मुद्राओं में देखा जा सकता है। दर्शक इन भावों के संकेत से ही उसका भी अभिप्राय समझ लेते हैं दैनिक जीवन में मनुष्य के परस्पर संबंधों और व्यवहार में प्रतीकों का व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है उदाहरण के लिए क्रॉस ईसाइयों का धार्मिक चिन्ह है वहीं स्वास्तिक का चिन्ह औं का धार्मिक प्रतीक है। प्रत्येक देश का अपना राष्ट्रीय झण्डा, राष्ट्र के राजनीतिक जीवन का प्रतीक माना जाता है और कहीं भी उसके अपमान को बर्दाश्त नहीं किया जाता। इसी प्रकार आवागमन क्षेत्र में हरी बत्ती अथवा हरी झण्डी वाहन को जाने के अनुमति देने का संकेत है जबकि लाल बत्ती या लाल झण्डी वाहन को रोकने का संकेत है।

आदिम जनजातियों में विभिन्न रंगों को विभिन्न लिंगों के लिए प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए Red Indianiyo में नीला रंग पुरुष का और पीला रंग स्त्री का प्रतीक है माना जाता है। हिन्दुओं में मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न देवी-देवताएँ माने जा...

ओं अथवा भावों का स्थानापन्न है इस प्रकार प्रतीक विभिन्न वस्तुओं, विचारों अथवा भावों का प्रतिनिधित्व करते है। ये सामाजिक जीवन में सामाजिक अन्त-क्रियाओं में पनपते और विकसित होते है। समाज के सदस्यों के लिए इनका अत्याधिक महत्व होता है। भले ही दूसरों के लिए इसका महत्व न हो।

11. <u>व्यवहारिकता</u> :— सामाजिक व्यवहार में प्रतीकों का महत्व न केवल आदिम समाजों में बल्कि अत्याधिक विकसित समाजों और आधुनिक समाजों में भी पाया जाता है। यह कहना कोई गलत बात नहीं होगा कि प्रतीकों के अभाव में मानव जीवन संभव नहीं है। इसकी यह विशेषता होती है कि प्रत्येक प्रयोग करने वाला जो अर्थ अभिव्यक्त करना चाहता है देखने अथवा सुनने वाला प्रतीक उसी अर्थ को समझता है, इस प्रकार दोनों ओर से प्रतीक का सुनिश्चित समान्य

IV. बाह्यता :— प्रतीकों की एक विशेषता बाध्यता है तो दूसरी विशेषता बाह्यता है। प्रतीक की बाह्य विशे
उसके पीछे सामूहिक स्वीकृति के कारण होती है। प्रत्येक व्यक्ति प्रतीकों के प्रति सम्मान की भावना रखता है।

Scanned with CamScanner